साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

वर्ष : 11, अंक : 9 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 1 अक्टूबर 2025 से 7 अक्टूबर 2025 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

अल नीनो से भारत में बदल रहा मानसून का चरित्र, सूखे में कमी, नम क्षेत्रों में मूसलाधार बारिश

नई दिल्ली। अल नीनो के प्रभाव से भारत में मानसून का चरित्र बदल रहा है। नए अध्ययन के अनुसार, अल नीनो के दौरान सूखे क्षेत्रों में बारिश की कमी होती है, जबकि नम क्षेत्रों में मूसलाधार बारिश होती है। अब तक की धारणा यह थी कि अल नीनो भारत में मानसून को कमजोर करता है और सूखा लाता है। अंतरराष्ट्रीय जर्नल साइंस में प्रकाशित नए अध्ययन ने इस धारणा को चुनौती दी है।

इस अध्ययन के नतीजे दर्शाते हैं कि अल नीनो का असर पूरे देश में एक जैसा नहीं होता। इस दौरान देश के दक्षिण-पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी भारत जैसे सूखे इलाकों में कुल बारिश और भारी बारिश की घटनाएं कम हो जाती हैं। लेकिन दूसरी तरफ मध्य और दक्षिण-पश्चिमी भारत जैसे पहले से ही नम क्षेत्रों में भले ही बारिश कम दिनों में होती है, लेकिन जब बारिश होती है तो वह बहुत ज्यादा तेज और खतरनाक होती है। वैज्ञानिकों के मुताबिक यह बदलाव 'कन्वेक्टिव बॉयेंसी' यानी तूफानों को ताकत देने वाली वायुमंडलीय शक्ति की वजह से होता है। भारत में 250 मिलीमीटर से अधिक बारिश की संभावना अल नीनो वर्षों में 43 फीसदी बढ़ जाती है, जबकि मध्य भारत के मानसूनी क्षेत्र में यह संभावना 59 फीसदी तक बढ़ जाती है। भारत में मानसून पर अल नीनो के असर को अब तक सूखा और बारिश की कमी से जोड़ा जाता रहा है। आमतौर पर माना जाता है कि अल नीनो से बारिश घटती है और सूखे की स्थिति बनती है। लेकिन अंतराष्ट्रीय जर्नल साइंस में प्रकाशित एक नए अध्ययन में इसको लेकर नए चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं। इस अध्ययन के मुताबिक अल नीनो के दौरान देश के सबसे ज्यादा बरसात वाले इलाकों में बारिश की तीव्रता और बढ़ जाती है। देखा जाए तो यह अध्ययन अल नीनो और भारत में मानसून के बीच एक चौंकाने वाले संबंध को उजागर करता है। अल नीनो, जिसका स्पेनिश भाषा में मतलब होता है %छोटा लड़का%। यह एक जटिल मौसमी प्रक्रिया है जिसमें प्रशांत महासागर के पूर्वी हिस्से का समुद्र गर्म हो जाता है। इसकी वजह से हवाओं का दबाव, दिशा और ताकत बदलती है और इसका पूरी दुनिया में वातावरण पर असर पड़ता है। अब तक यह माना जाता था कि अल नीनो की वजह से भारत में मानसून कमजोर पड़ जाता है। हालांकि शोधकर्ताओं के मुताबिक अब तक के ज्यादातर अध्ययन पूरे सीजन की औसत बारिश पर केंद्रित रहे थे। लेकिन इस नई रिसर्च में खासतौर पर अल नीनो वर्षों के दौरान रोजाना होने वाली भारी बारिश का विश्लेषण किया है, जिसके नतीजे हैरान करने वाले हैं। भारत में अल नीनो और बारिश के संबंध को समझने के लिए इस नए अध्ययन में शोधकर्ताओं ने सौ साल से भी ज्यादा पुराने आंकड़े खंगाले हैं। उन्होंने 1901 से 2020 तक भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के रोजाना होने वाले बारिश के रिकॉर्ड का विश्लेषण किया है।

इसके साथ ही 1979 से 2020 तक के वायुमंडलीय आंकड़ों को भी मिलाकर देखा गया, ताकि चरम मौसमी घटनाओं के पीछे की स्थितियों को समझा जा सके। नतीजा यह निकला कि अल नीनो का असर पुरे देश में एक जैसा नहीं होता। इस दौरान देश के दक्षिण-पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी भारत जैसे सूखे इलाकों में कुल बारिश और भारी बारिश की घटनाएं कम हो जाती हैं। लेकिन दूसरी तरफ मध्य और दक्षिण-पश्चिमी भारत जैसे पहले से ही नम क्षेत्रों में भले ही बारिश कम दिनों में होती है, लेकिन जब बारिश होती है तो वह बहुत ज्यादा तेज और खतरनाक होती है। वैज्ञानिकों के मुताबिक यह बदलाव 'कन्वेक्टिव बॉयेंसी' यानी तूफानों को ताकत देने वाली वायुमंडलीय शक्ति की वजह से होता है। वैज्ञानिकों के मुताबिक अल नीनो के दौरान नम क्षेत्रों में यह बॉयेंसी बढ़ जाती है, जिससे भारी से भारी बारिश की आशंका ज्यादा हो जाती है। अध्ययन के मुताबिक पूरे भारत में 250 मिलीमीटर से अधिक बारिश की संभावना अल नीनो वर्षों में 43 फीसदी बढ़ जाती है, जबकि मध्य भारत के मानसूनी क्षेत्र में यह संभावना 59 फीसदी तक बढ़ जाती है। शोधकर्ताओं के अनुसार, जितना ज्यादा मजबूत अल नीनो होता है, इस बात की उतनी ही अधिक संभावना होती है कि भारत के सबसे नम मानसूनी इलाकों में रोजाना होने वाली बारिश चरम पर पहुंचे। भारी बारिश की यह घटनाएं तबाही ला सकती हैं। इसकी वजह से अचानक आई बाढ़ गांवों को डुबो देती है, घरों को बहा ले जाती है। इसकी वजह से किसानों की मेहनत चौपट हो सकती है। वहीं इनका सीधा असर लाखों लोगों की जिंदगी पर पड़ सकता है। ऐसे में यह अध्ययन सिर्फ वैज्ञानिक एक खोज नहीं है, बल्कि लोगों की जिंदगी से सीधे जुड़ा मुद्दा है। बेहतर पूर्वानुमान मिलने से सरकार और किसान पहले से तैयारी कर पाएंगे और बड़े नुकसान से बचा जा सकेगा। शोधकर्ताओं का अध्ययन में कहना है कि अब अल नीनो और ला नीना से जुड़े मौसमी पूर्वानुमानों को और अधिक सटीक बनाया जा सकता है। इसकी मदद से भारत में भारी बारिश के खतरों को पहले से भांपा जा सकता है। इस तरह लाखों लोगों की जिंदगी व जीविका को सुरक्षित रखा जा सकता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नगरकोट माता मंदिर में पूजन कर खरीदे सिंघाड़े

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंगलवार रात उज्जैन के बुधवारिया चौराहे पर माता के पंडाल पहुंचकर माता का पूजन किया और नगरकोट माता मंदिर में माता की आरती कर पूजन किया। आरती पूजन की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने देश-प्रदेश की सुख समृद्धि की कामना की। मुख्यमंत्री ने नगर कोट माता मंदिर में पूजन करने के बाद मंदिर के बाहर दुकान से सिंघाड़े खरीदे और महिला दुकानदार से चर्चा कर उनके परिवार और स्वास्थ्य की जानकारी भी ली। मुख्यमंत्री डॉ. यादव पांडियाखेड़ी में अलख उज्जैनी संस्था के गरबा उत्सव में भी शामिल हुये।

स्वस्थ नारी –सशक्त परिवार अभियान अंतर्गत सरोजनी नायडू महाविद्यालय में साढ़े चार हजार से अधिक छात्राओं की हुई सेहत की जांच

'खुल के पूछो' कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने किया छात्राओं का शंका समाधान

भोपाल उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने सरोजनी नायडू शासकीय कन्या महाविद्यालय भोपाल में छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि ऋस्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान का मूल किशोरियों और युवतियों का संपूर्ण स्वास्थ्य है। स्वस्थ परिवार की आधारशिला महिलाओं का स्वास्थ्य है। उन्होंने कहा कि हीमोग्लोबिन जांच, पौष्टिक आहार, नियमित व्यायाम और तनावमुक्त जीवनशैली अपनाकर जीवन के लक्ष्यों को सहजता से प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने छात्राओं से अपील की कि वे निकटतम शासकीय स्वास्थ्य संस्थाओं में जाकर नियमित स्वास्थ्य जांच अवश्य कराएँ, जहाँ जांच, परामर्श और उपचार नि:शुल्क उपलब्ध है। स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान के अंतर्गत सरोजनी नायडू शासकीय कन्या महाविद्यालय भोपाल में विशेष स्वास्थ्य परीक्षण एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में कुल 4,518 छात्राओं की स्वास्थ्य जांच की गई। साथ ही, विषय विशेषज्ञों ने छात्राओं को स्वस्थ जीवनशैली से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की गयीं।

लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्य मंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने छात्राओं से कहा कि अपनी स्वास्थ्य समस्याओं को छुपाने से वे और गंभीर हो सकती हैं। इसलिए बेझिझक होकर स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं या संस्थाओं से परामर्श लेना चाहिए। विधायक श्री भगवानदास सबनानी, माननीय महापौर श्रीमती मालती राय, मिशन संचालक राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन डॉ. सलोनी सिडाना सहित स्वास्थ्य विभाग, उच्च शिक्षा विभाग और महिला बाल विकास विभाग के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।शिविर में हीमोग्लोबिन, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, सिकल सेल स्क्रीनिंग, क्षय रोग तथा नेत्र रोग की जांच कर विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा परामर्श दिया गया। छात्राओं ने 'खुल के पूछो' कार्यक्रम में पोषण, मासिक धर्म स्वच्छता, त्वचा व सौंदर्य संबंधी प्रश्न पूछे जिनका विशेषज्ञों ने समाधान किया। स्वास्थ्य जागरूकता गतिविधियों के अंतर्गत स्वास्थ्य खेल, जुम्बा सत्र (थोड़ी सेहत, थोड़ी मस्ती) का आयोजन किया गया। कई छात्राओं ने स्वैच्छिक रक्तदान भी किया। शिविर में आयुष्मान भारत डिजिटल हेल्थ आईडी एवं आयुष्मान कार्ड भी बनाए गए। कुल 439 आभा और आयुष्मान कार्ड बनाए गए, 459 छात्राओं का दंत परीक्षण, 152 को मानसिक स्वास्थ्य परामर्श, 381 को आयुष एवं पोषण सेवाएँ तथा 120 की सिकल सेल टेस्टिंग की गई। साथ ही, 20 यूनिट रक्तदान भी हुआ।

सतपुड़ा से बुलाए तीन हाथी, एक महीने से छका रही मादा तेंदुआ पिंजरे में कैद

इंदौर. बड़वानी जिले में दो बच्चों का शिकार करने वाली मादा तेंदुआ को पकड़ने में वन विभाग को एक महीने बाद सफलता मिली। इंदौर वन मंडल की टीम ने तेंदुए को पिंजरे में कैद कर मंगलवार देर रात भोपाल वन विहार भेज दिया। वन विभाग की टीम पिछले एक महीने से तेंदुए को पकड़ने के लिए मशक्कत कर रही थी। आधा दर्जन से अधिक स्थानों पर पिंजरे लगाकर, कैमरे और ड्रोन से सर्चिंग भी की गई थी। मंगलवार को ही वन विभाग ने सतपुड़ा टाइगर रिजर्व से तीन हाथी बुलाए थे। अफसरों ने क्षेत्र में हाथी से सर्चिंग की योजना बनाई थी। हाथी जब आधे रास्ते तक पहुंचे, तभी मादा तेंदुआ पिंजरे में ट्रैप हो गई। एसडीओ योहान कटारा ने बताया कि बड़वानी जिले की राजपुर तहसील के लिंबाई और आसपास के गांवों में दो बच्चों पर तेंदुए ने हमला किया था। मादा तेंदुआ ने एक बच्चे का शिकार किया था, जिससे उसके मुंह इंसान का खून लग गया था।

खनिज विभाग द्वारा ग्राम बिलीडोज में अवैध उत्खनन का प्रकरण पंजीबद्ध कर 33 लाख 61 हजार से अधिक का अर्थदण्ड अधिरोपित किया गया

इंदौर, इंदौर संभाग के झाबुआ जिले में खनिज विभाग द्वारा अवैध उत्खनन पर बड़ी कार्वाई की गई है। झाबुआ कलेक्टर श्रीमती नेहा मीना के निर्देशानुसार खनिज अधिकारी श्री जुवानसिंह भिडे, प्रभारी खनिज निरीक्षक (सर्वेयर) श्रीमती आलिशा रावत एवं खनिज अमले द्वारा जिले में म.प्र. खनिज (अवैध उत्खनन, परिवहन तथा भण्डारण का निवारण) नियम 2022 के अंतर्गत अवैध उत्खनन, परिवहन तथा भण्डारण पर प्रभावी कार्यवाही करते हुए ग्राम बिलीडोज

तहसील झाबुआ सर्वे नं. 133, 137 पर मुरूम खनिज का अवैध उत्खनन होना पाये जाने पर प्रकरण पंजीबद्ध किया गया तथा जैन डेवलपर संचालक श्री मनोहरलाल छाजेड निवासी पारा एवं श्री दीपक भण्डारी निवासी जगमोहनदास मार्ग झाबुआ के विरूद्ध 33 लाख 61 हजार 590 रूपये का अर्थदण्ड अधिरोपित किया गया। परिवहन परिपत्र में अंकित मात्रा से अधिक अवैध परिवहन करते पाये जाने पर ओवरलोड का 01 प्रकरण पंजीबद्ध कर 15 हजार 209 रूपये अर्थदण्ड अधिरोपित किया गया। खनिज अमले द्वारा जिले में सतत भ्रमण कर अवैध उत्खनन, परिवहन तथा भण्डारण पर प्रभावी कार्यवाही की जा रही है।

स्वच्छता सेवा अभियान अंतर्गत होम कंपोस्ट प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

आगर मालवा स्वच्छता सेवा अभियान के अंतर्गत आज नगर पालिका परिषद आगर द्वारा वार्ड क्रमांक 21 में महिलाओं एवं स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के लिए होम कंपोस्ट प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम नगर पालिका अध्यक्ष श्री नीलेश जैन पटेल एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्री कुशल सिंह डोडवे के निर्देशन तथा वार्ड पार्षद प्रतिनिधि अर्जुन गवली की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में सहयोगी संस्था एसके मैनेजमेंट सर्विस की टीम द्वारा महिलाओं को घरेलू कचरे से जैविक खाद (होम कंपोस्ट) तैयार करने की विधि और उसके लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इसके साथ ही मार्केट जाते समय प्लास्टिक बैग के बजाय कपड़े के थैले उपयोग करने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर नगर पालिका द्वारा कपड़े के थैले भी वितरित किए गए, जिन्हें स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा तैयार किया गया है।

कार्यक्रम में नगर पालिका के स्वच्छता निरीक्षक बसंत डुलगंज, एसके वेस्ट मैनेजमेंट से सूरज चौहान, हेमंत बैरागी, अनीता पांचाल एवं अन्य सदस्य उपस्थित रहे। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य नगर में स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देना था

रोजगार मेले में 102 युवाओं का चयन

खरगोन सेगांव जनपद पंचायत परिसर स्थित बीआरजीएफ भवन में मध्यप्रदेश डे राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन खरगोन एवं सेगांव द्वारा संयुक्त रूप से रोजगार मेला लगा। 170 पंजीयन हुए, 102 बेरोजगारों का चयन विभिन्न कंपनियों में हुआ। जनपद पंचायत उपाध्यक्ष ओम पाटीदार, जनपद सीईओ रीमा अंसारी आदि मौजूद रहे।

धान उत्पादक किसानों को दीपावली से पहले ही बोनस के रूप में दिया तोहफा -मुख्यमंत्री डॉ. यादव

245 करोड़ लागत के निर्माण कार्यों का भूमिपूजन एवं लोकार्पण

भोपाल (एजेंसी)मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि देश का उदर-पोषण करने वाले अन्नदाताओं की खुशहाली में ही हम सबकी खुशहाली है। अन्नदाताओं की आर्थिक मजबूती ही देश और प्रदेश के विकास और समृद्धि का आधार है। हमारी सरकार ने किसानों के सभी हितों का विशेष ध्यान रखा है। हमारी विकास नीतियों के मूल में किसान ही हैं। गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी कल्याण के लिए हम मिशन मोड में आगे बढ़ रहे हैं। किसानों को उनके हर वाजिब हक के साथ-साथ हमारी सरकार किसान सम्मान निधि भी दे रही है। यह निधि किसानों के प्रति हमारे सम्मान की अभिव्यक्ति है। किसानों के कल्याण और इनकी समृद्धि के लिए हमारी सरकार कोई कसर नहीं छोड़ेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को बालाघाट जिले के कटंगी तहसील मुख्यालय में राज्य स्तरीय किसान सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के 6 लाख 69 हजार 272 धान उत्पादक किसानों के खाते में 337 करोड़ 12 लाख रुपये की प्रोत्साहन (बोनस) राशि सिंगल क्लिक से उनके बैंक खातों में अंतरित की। ज्ञात हो कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पूर्व में समर्थन मूल्य पर धान उपार्जित करने वाले किसानों को प्रति हेक्टेयर 4 हजार अधिकतम 10 हजार रूपये की बोनस राशि देने की घोषणा की थी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बालाघाट जिले में करीब 245 करोड़ रुपये की लागत वाले 78 विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन भी किया। इसमें 39 करोड़ रूपए लागत से बालाघाट में सरेखा आर.ओ.बी. एवं परसवाड़ा में 31 करोड़ रूपए की लागत से नवनिर्मित सांदीपनि विद्यालय भवन का लोकार्पण भी शामिल है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बालाघाट जिले के नक्सल प्रभावित ग्रामों के 850 युवाओं को नियुक्ति पत्र भी वितरित किए। इन सभी युवाओं को गृह विभाग के विशेष सहयोगी दस्ते में नियुक्ति दी गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बालाघाट जिले में हुए रोजगार महोत्सव के जरिए चुने गए 3700 से अधिक युवाओं को प्रतिष्ठित निजी कंपनियों में नियुक्ति पत्र भी दिए। इन चयनितों में लगभग 1000 युवतियां भी शामिल हैं, जिन्हें बेंगलुरु की निजी कंपनियों में नियुक्ति दी जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह सम्मेलन न केवल किसानों की समृद्धि, बल्कि युवाओं के लिए भी नए अवसरों से भरपूर है। किसान और युवा विकास के सेतु की तरह हैं। प्रदेश के समग्र विकास के लिए हमारी सरकार इन दोनों के परिश्रम और असीम ऊर्जा को नई दिशा देगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि किसानों के आशीर्वाद से ही किसान का बेटा आज मुख्यमंत्री है। किसानों को कोई तकलीफ नहीं होने दी जाएगी। उन्होंने कहा कि गेहूं और सोयाबीन पर न्यूनतम समर्थन मूल्य की अतिरिक्त बोनस राशि भी दी जाएगी। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव को बालाघाट जिले के जीआई टैग प्राप्त चिन्नौर का चावल और जैविक गुड़ भेंट किया गया। किसान सम्मेलन में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने घोषणा की कि कटंगी में नया सामुदायिक अस्पताल बनाया जाएगा। हाईस्कूल को हायर सेकेंड्री स्कूल में प्रोन्नत किया जाएगा। कटंगी से सिवनी राजमार्ग पर नया सेतु बनाया जाएगा। उन्होंने क्षेत्र के किसानों की बड़ी समस्या का निदान करते हुए कहा कि पेंच नेशनल पार्क की परिधि क्षेत्र से लगे खेतों की फसलों को जंगली जानवरों से बचाने के लिए चारों ओर सोलर फेंसिंग कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि राजीव सागर सिंचाई परियोजना से नहलेसरा बांध को इंटरलिंक कराने के लिए परीक्षण कराकर कार्ययोजना तैयार कराई जाएगी।

गुदड़ी के लाल विकेश ने माता पिता के नाम के खातिर दिन-रात पढ़ाई को किये समर्पित

डीएसपी बना किसान पुत्र प्रदेश के ट्राइबल जिले में युवाओं के लिए बना रोल मॉडल

इंदौर इंदौर संभाग में जनजातीय बाहुल्य जिले झाबुआ के गुदड़ी के लाल विकेश मचार ने कहावत को चरितार्थ कर दिखाया है। विपरीत परिस्थितियों से लड़ते हुए विकेश मचार ने अपनी प्रतिभा, मेहनत और असाधारण गुणों का परिचय देते हुए प्रदेश की सर्वोच्य प्रतियोगी परीक्षा में अपना लोहा मनवाया है। विकेश ने बताया कि एमपीपीएससी 2021 में वे लेखा परीक्षण अधिकारी पद पर चुने गए थे। लेकिन उन्होंने अपने माता पिता का नाम रोशन करने के लिए और आगे बढ़े। वो चाहते थे कि उन्हें, अपने माता पिता का नाम बड़ा करना है तो बड़ा करना है। बस इसके बाद उन्होंने जी तोड़ मेहनत कर 2024 की परीक्षा में डीएसपी के पद की दावेदारी पर खरे उतरे । आज झाबुआ जिले के युवाओं में विकेश और उनके अभिभावकों की उपलब्धि की सोशल मीडिया पर चर्चा हो रही है। साथ ही झाबुआ कलेक्टर नेहा मीणा और अपर कलेक्टर श्री सी.एस. सोलंकी ने पुष्पगुच्छ भेंट कर बधाई और शुभकामनाएं दी। झाबुआ में राणापुर जनपद के ककरादरा कुंदनपुर में किसान पुत्र विकेश ने कक्षा 6 से 12वीं तक नवोदय विद्यालय आलीराजपुर में अपनी शिक्षा पूरी की। इसके बाद वे इलेक्ट्रिकल में इंदौर के श्री गोविंदराम सक्सेरिया इंस्टीट्यूड ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस से इंजीनियरिंग की। विकेश के 2 भाई और 2 बहन है। उन्होंने स्वयं रूम से रहकर एमपीपीएससी की परीक्षा की तैयारी की। कोचिंग संस्थान की फीस नहीं होने से रूम पर ही पूरी लगन के साथ प्री और मेंस में जुटे रहे। विकेश ने अपनी उपलब्धि माता पिता और झाबुआ के युवाओं को समर्पित की है।

वैज्ञानिकों की चेतावनी-ग्लोबल वार्मिंग के बाद आ सकता है हिमयुग!

मुंबई। वैज्ञानिकों ने खोजा पृथ्वी के जलवायु संतुलन में एक नया तत्व, जो दिखाता है कि ज्यादा गर्मी के बाद पृथ्वी खुद को जरूरत से ज्यादा ठंडा कर सकती है। पारंपरिक मॉडल में केवल चट्टानों के क्षरण से कार्बन डाइऑक्साइड हटाने की बात थी, लेकिन नई रिसर्च में समुद्री जैविक गतिविधियों को भी महत्वपूर्ण बताया गया है।

गर्म जलवायु में समुद्र में पोषक तत्वों की अधिकता प्लवक को बढ़ाती है, जो सीओ2 को सोखते हैं और मरने के बाद उसे समुद्र में जमा कर देते हैं।यह जैविक प्रतिक्रिया कभी-कभी इतनी तेज होती है कि पृथ्वी का तापमान सामान्य से नीचे गिर सकता है, जिससे हिमयुग जैसी स्थिति बन सकती है। हालांकि भविष्य में ऐसा संभव है, लेकिन यह प्रक्रिया बेहद धीमी है, इसलिए आज के ग्लोबल वार्मिंग संकट से निपटने के लिए यह भरोसेमंद उपाय नहीं हो सकता। हाल ही में यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, रिवरसाइड (यूसीआर) के शोधकर्ताओं ने पृथ्वी के प्राकृतिक कार्बन चक्र में एक बड़ी खामी का पता लगाया है। उनका कहना है कि यह खामी इस बात को समझाने में मदद करती है कि कैसे पृथ्वी के तापमान में असामान्य बदलाव आ सकते हैं और लंबे समय में दुनिया के तापमान (ग्लोबल वार्मिंग) के बाद अत्यधिक ठंडक, यानी हिमयुग (आइस ऐज) आ सकता है।

पारंपरिक सोच क्या कहती है? पारंपरिक दृष्टिकोण यह मानता है कि पृथ्वी का तापमान मुख्यत: रॉक वेदरिंग या चट्टानों के प्राकृतिक क्षरण प्रक्रिया से नियंत्रित होता है। इस प्रक्रिया में बारिश वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ2) को अवशोषित करती है और उसे भूमि पर मौजूद चट्टानों, विशेषकर ग्रेनाइट जैसी सिलिकेट चट्टानों, तक ले जाती है। धीरे-धीरे चट्टानें घुलती हैं और यह कार्बन और कैल्शियम समुद्र तक पहुंचते हैं। समुद्र में ये मिलकर शंख, कोरल और लाइमस्टोन रीफ का निर्माण करते हैं, जिससे कार्बन लंबे समय तक समुद्र तल में स्थिर हो जाता है। वैज्ञानिकों ने खोजा कार्बन चक्र का नया पहलू, जो पृथ्वी को अत्यधिक ठंडक की ओर धकेल सकता है। जैसे-जैसे पृथ्वी गर्म होती है, चट्टानों का क्षरण तेज होता है और अधिक सीओ2 अवशोषित होकर वायुमंडल से निकल जाता है। इससे ग्रह ठंडा होने लगता है। शोध पत्र में शोधकर्ता के हवाले से कहा गया है कि जैसे ही ग्रह गर्म होता है, चट्टानें तेजी से कार्बन को अवशोषित करती हैं और फिर से ठंडा कर देती हैं। लेकिन पुरानी भूवैज्ञानिक प्रमाणों से पता चलता है कि पृथ्वी के शुरुआती हिमयुग इतने गंभीर थे कि पूरा ग्रह बर्फ और हिम की चादर से ढक गया था। इसका मतलब यह हुआ कि केवल चट्टानों के माध्यम से धीरे-धीरे तापमान संतुलित करना पूरी कहानी नहीं हो सकती।

शोधकर्ताओं ने पाया कि समुद्र में कार्बन जमा होना भी इस प्रक्रिया में अहम भूमिका निभाता है। जब वायुमंडल में सीओ2 बढ़ता है और ग्रह गर्म होता है, तो अधिक पोषक तत्व जैसे फास्फोरस समुद्र में बहकर पहुंचते हैं। ये पोषक तत्व प्लैंकटन की वृद्धि को प्रोत्साहित करते हैं। प्लैंकटन सूर्य की रोशनी की मदद से कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं। जब प्लैंकटन मरते हैं, तो उनका शरीर कार्बन के साथ समुद्र तल में गिरता है, जिससे कार्बन स्थायी रूप से जमा हो जाता है।

लेकिन गर्म और पोषक तत्वों से भरे समुद्रों में ऑक्सीजन का स्तर कम हो जाता है। ऑक्सीजन की कमी के कारण फास्फोरस समुद्र तल में जमा होने के बजाय फिर से समुद्र में रिसाइकिल हो जाता है। इससे एक प्रतिक्रिया चक्र (फीडबैक लूप) बनता है= अधिक पोषक तत्व -अधिक प्लैंकटन -अधिक कार्बन जमा होना अधिक ठंडक होना है। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे संतुलन बनाने की बजाय पृथ्वी को अत्यधिक ठंडक की ओर ले जा सकती है। साइंस में प्रकाशित शोध पत्र में इस प्रक्रिया को समझाते हुए शोधकर्ता के हवाले से कहा गया है कि मान लें कि आप घर में एयर कंडीशनर (एसी) चालू करके तापमान 25 डिग्री सेल्सियस रखना चाहते हैं। अगर बाहर गर्मी बढ़ती है, तो एसी ज्यादा ठंडक पैदा करता है। कुछ मामलों में, यह ठंडक जरूरत से ज्यादा हो सकती है। इसी तरह पृथ्वी का थर्मोस्टेट कभी-कभी अत्यधिक ठंडा कर देता है। शोध में यह भी पाया गया कि प्राचीन समय में वायुमंडलीय ऑक्सीजन का स्तर बहुत कम था, जिससे यह %थर्मोस्टेट% और भी अनियमित और अस्थिर था। यही वजह थी कि पुराने हिमयुग इतने गंभीर थे। आज ऑक्सीजन का स्तर अधिक होने के कारण प्रतिक्रिया चक्र कमजोर होगा, लेकिन फिर भी यह अगली हिमयुग की शुरुआत को कुछ हद तक आगे ला सकता है। तो क्या इसका मतलब यह है कि मानवजनित ग्लोबल वार्मिंग के बाद पृथ्वी अगले हिमयुग में जा सकती है? शोधकर्ताओं का कहना है, हां, लेकिन यह जल्दी नहीं होगा। उनका मॉडल बताता है कि ठंडक का यह अधिकतम असर निश्चित रूप से होगा, लेकिन इतनी तेजी से नहीं कि वर्तमान जलवायु संकट को कम कर सके। शोध पत्र में कहा गया है कि चाहे अगला हिमयुग 50,000 साल में शुरू हो या 2,00,000 साल में, असली सवाल यह है कि हमें अभी तापमान बढ़ने को रोकने पर ध्यान देना चाहिए। पृथ्वी का प्राकृतिक थर्मोस्टेट हमारी मदद इस जीवनकाल में नहीं कर सकता। इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि पृथ्वी की प्राकृतिक प्रक्रियाएं जटिल हैं। ग्लोबल वार्मिंग के वर्तमान दौर में हमें अपनी गतिविधियों और कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करना अनिवार्य है। जबकि प्राकृतिक प्रणाली अंतत: ग्रह को ठंडा कर देगी, यह प्रक्रिया बहुत धीमी है और हमारे जीवनकाल में इसके प्रभाव का अनुभव नहीं होगा। इसलिए सतत प्रयास और जागरूकता आज की सबसे बड़ी जरूरत है। वैज्ञानिकों का मानना है कि हमें अभी भी अपने उत्सर्जन को नियंत्रित करने की जरूरत है। यह सच है कि पृथ्वी कभी न कभी फिर से ठंडी होगी, लेकिन इतनी देर में कि यह इस पीढ़ी के किसी काम नहीं आएगी।

स्वच्छता में नंबर 1 शहर में फिर घूम रहे आवारा पशु

इन्दौर। देश के सबसे स्वच्छ शहर में एक बार फिर आवारा पशु दिखने लगे हैं। कई चौराहों सहित प्रमुख मार्गों, बाजारों, सार्वजनिक स्थानों पर पशु घूम रह हैं और नगर निगम के अधिकारी कर्मचारी कोई कार्रवाई नहीं कर रहे हैं। किला मैदान क्षेत्र के तहत खड़े गणपति, नंदबाग रोड, स्कीम नंबर 51 सहित संगम नगर व आसपास की कॉलोनियों में आवारा पशु अधिक देखे जा सकते हैं। इसी तरह मिल क्षेत्र, बड़ा गणपति, मल्हारगंज, बाणगंगा जैसे इलाकों में भी आवारा पशु सड़कों पर घूम रहे हैं।

नगर निगम स्वच्छता को लेकर हर साल करोड़ों रूपये खर्च करता है और पूरे संसाधन लगाता है मगर तमगा मिलने के बाद अधिकारी काम में फिर लापरवाही बरतने लगते हैं और कचरा गंदगी के साथ सीवरेज, ड्रेनेज का पानी भी सड़क पर बहता रहता है। अब आवारा पशु भी सड़कों पर फिर घूमने लगे हैं। निगम के स्वास्थ्य अधिकारी, रिमूवल अधिकारी और कोंदवाड़ा के अधिकारी इन पशुओं को नहीं पकड़ते हैं न ही पशुपालक इन्हें बाहर करते हैं। मुख्य सड़कों के साथ चौराहों, सार्वजनिक स्थानों, धार्मिक स्थलों पर आवारा पशु अधिक दिखते हैं। बस्तियों के साथ पॉश कॉलोनियों में भी आवारा पशु घूमते रहते हैं। संगम नगर, स्कीम नंबर 51, छोटा बांगड़दा, किला मैदान क्षेत्र,नंदबाग रोड पर सबसे अधिक पशु हैं। इन क्षेत्रों के निगम के अधिकारी गाड़ियों में ही घूमकर निकल जाते हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008